अध्याय 18
वर्जित यौन संबंध

अध्याय 18 में अतिरिक्त नियम दिए गए हैं जिन्हें परमेश्वर के लोगों के बीच पवित्र जीवन को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया था। रोचक बात यह है कि यह संपूर्ण तौर पर यौन संबंधों पर बात करता है: यहाँ दिए गए नियमों में कौटुम्बिक व्यभिचार वर्जित है, जिसमें विभिन्न अपवित्र कृत्यों का विवरण दिया गया है, जिसमें इस्राएलियों को सम्मिलित होने की आज्ञा नहीं थी, और इसके बाद अन्य यौन पापों को भी प्रतिबंधित कर दिया गया। एक मनुष्य के लिए, निम्नलिखित में से किसी के साथ भी यौन संबंध बनाना वर्जित था:

उसकी माता के साथ (18:7);
उसके पिता की पत्नी के साथ (उसकी सौतेली माता) (18:8);
उसकी बहन या सौतेली बहन के साथ (18:9);
उसकी के पोती साथ (18:10);
उसकी सौतेली बहन के साथ (18:11);
उसकी चाची के साथ (18:12-14);
उसकी बहु के साथ (18:15);
उसकी साली के साथ (18:16);
एक स्त्री *और* उसकी पुत्री या पोती के साथ (18:17);
एक स्त्री *और* उसकी बहन के साथ (जब वह स्त्री जीवित थी) (18:18);
जब एक स्त्री मासिक धर्म की ऋतु हो, तब उस के साथ (18:19);
उसके पड़ोसी की पत्नी के साथ (18:20);
अपने ही लिंग के व्यक्ति के साथ (18:22);
एक पशु के साथ (18:23).

इस अध्याय में दिए गए सभी नियम, आयत 21 में पाए गए प्रतिबंधों को छोड़कर,यौन क्रियाओं से संबंधित हैं, जिसने एक बच्चे को मोलेक को बलिदान करने और परमेश्वर के नाम का अपमान करने से वर्जित किया था। दिए गए संदर्भ को देखते हुए, ऐसा प्रतीत होता है कि इन नियमों को अवैध यौन व्यवहार में सम्मिलित होने के रूप में भी देखा गया था, इस में इस्राएलियों की अन्य देवताओं की पूजा को अक्सर वेश्यावृत्ति के समान कहा गया है। सम्भवतः, मोलेक को बच्चे का बलिदान चढ़ाने को एक पापमय यौन क्रिया के रूप में देखा जाता था।

ये यौन पाप क्यों लेवीय व्यवस्था में इस्राएल के लिए प्रतिबन्धित नैतिक अपराधों के प्रमुख विषय को आरम्भ करती हैं? शायद ऐसा इसलिए है क्योंकि यौन क्रियाएँ मनुष्य के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण हैं। लैंगिकता को मानवता की परिभाषा कहा जा सकता है (उत्पत्ति 1:27)। यौन पापों का महत्व बाइबल में स्पष्ट है। पहले पाप के परिणाम स्वरूप, मनुष्यों ने अपने नंगेपन को पहचाना; और नंगेपन को प्रायः यौन की क्रियाओं के बराबर समझा जाता है। समाज के भ्रष्ट व्यवहार को सदैव ही इसकी कामुकता से चित्रित किया गया है, चाहे यह सदोमियों के द्वारा अभ्यास की गई हो (उत्पत्ति 19) या इस्राएलियों के द्वारा (न्यायियों 19)।

इसी कारण, इन पापों से पहले निपटा गया क्योंकि ये किसी भी दुष्ट समाज के केंद्र में थे। इस्राएल के एक पवित्र देश बनने के लिए, विकृत यौन आचरण को बुरा नाम दिया जाना आवश्यक था। एक बार लोगों को जब यह समझ आ गया कि स्वीकार्य यौन आचरण में क्या सम्मिलित था - और उन्होंने इस अध्याय में पाई जाने वाली विधियों का अनुसरण करने का निश्चय किया - तो जीवन के अन्य पहलुओं से सम्बन्धित नियम दिए जा सकते थे।

इस अध्याय को तीन भागों में बाँटा जा सकता है। यह एक परिचय के साथ आरम्भ होता है, जो यह स्पष्ट करता है कि ये नियम किसने दिए थे और इनका पालन क्यों आवश्यक था (18:1-5)। अगला मुख्य भाग है, जिसमें वे नियम दिए गए हैं जिन्हें इस्राएल को पालन करने की आवश्यकता थी (18:6-18) जिन्हें कौटुम्बिक यौन सम्बन्धों में विभाजित किया जा सकता है (18:19-23)। यह अध्याय एक सारांश के साथ समाप्त होता है यह बताते हुए कि इस्राएल के साथ क्या होगा यदि लोगों ने इन नियमों को मानने से मना किया (18:24-30)।

नियमों के लिए स्रोत और औचित्य (18:1-5)

[1]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"इस्राएलियों से कह कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। [3]तुम मिस्र देश के कामों के अनुसार, जिसमें तुम रहते थे, न करना; और कनान देश के कामों के अनुसार भी, जहाँ मैं तुम्हें ले चलता हूँ, न करना; और न उन देशों की विधियों पर चलना। [4]मेरे ही नियमों को मानना, और मेरी ही विधियों को मानते हुए उन पर चलना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। [5]इसलिये तुम मेरे नियमों और मेरी विधियों को निरन्तर मानना; जो मनुष्य उनको माने वह उनके कारण जीवित रहेगा। मैं यहोवा हूँ।"

यौन सम्बन्धों के विषय में परमेश्वर ने अपने इन नियमों का प्रकाशन आरम्भ किया और स्वयं को नियमों के स्रोत के रूप में मान्यता दी। उसने मूल कारण कि घोषणा की और कहा कि इस्राएल को इनका पालन करना चाहिए: वह उनका परमेश्वर है, जो उन्हें मिस्र से छुड़ाकर ले आया था।

टिप्पणीकारों ने संकेत किया है कि अध्याय 18 दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व[1] के हित्ती आधिपत्य की सन्धियों का स्मरण दिलाता है। ये संधियाँ एक बड़ी शक्ति

(एक "अधिपति") और उसके नियंत्रण के अधीन एक देश या लोगों (एक "दास") के बीच की जाती थी। विजेता राष्ट्र संधि की शर्तों की घोषणा करवाता था। इस प्रकार की संधि के आदर्श रूप में (1) एक भूमिका जिसमें संधि की घोषणा करने वाले विजेता का नाम लिखा होता था; (2) एक ऐतिहासिक प्रस्तावना, जिसमें संधि के दोनों पक्षों के बीच के सम्बन्ध को स्मरण किया गया था; (3) संधि की शर्तें, यह बताते हुए की जीते हुए लोगों के लिए क्या आवश्यक था; और (4) श्राप और आशीषें - जो ये हैं, कि यदि शर्तों का पालन किया जाए तो उसकी आशीषें और उनका पालन न किया जाए तो दण्ड की चेतावनियाँ। अन्य मामले (जैसे एक संधि को कहाँ पर रखा जाए) भी सम्मिलित हो सकते थे।

यह अध्याय इस शैली का अनुसरण करता है। (1) यह उसकी पहचान करता है जिसने इन नियमों (संधि) को बनाया था: स्वयं परमेश्वर (18:2)। (2) इस प्रभु और जिन लोगों को ये नियम दिए गए थे उनके मध्य में भूतकाल के इतिहास का सन्दर्भ दिया गया है: परमेश्वर उन्हें मिस्र से बाहर निकालकर लाया था (18:3)। (3) व्यवस्था में पाई जाने वाली शर्तों (संधि) की सूची दी गई है। उन्हें एक व्यापक सामान्य कथन के रूप में प्रस्तुत किया गया है (18:3-5)। और इसके बाद विस्तृत नियम दिए गये हैं (18:6-23)। (4) आशीषें और श्राप भी दिए गए हैं। आयत 5 में आशीष पाई जाती हैं ("जो मनुष्य इनको माने वह उनके कारण जीवित रहेगा"), और 28, और 29 आयतों में श्राप पाए जाते हैं (अब ऐसा न हो कि जिस रीति से जो जाति तुम से पहले उस देश में रहती थी उसको उसने उगल दिया, उसी रीति जब तुम उसको अशुद्ध करो, तो वह तुम को भी उगल दे। जितने ऐसा कोई घिनौना काम करें वे सब प्राणी अपने लोगों में से नष्ट किए जाएँ)।

यह तुलना उपयुक्त हो या नहीं,[2] यह वाक्यांश इस्राएल और परमेश्वर के बीच में वास्तविक वाचा को दोहराता है जो उन अच्छी बातों पर आधारित थी जो परमेश्वर ने इस्राएल के लिए की थीं। इसमें इस्राएल की सम्पूर्ण आज्ञाकारिता की आवश्यकता थी, जिसमें आज्ञाकारिता के लिए आशीष और अनाज्ञाकारिता के लिए विनाश की प्रतिज्ञा की गई थी।

आयतें 1, 2. यहोवा ने यौन सम्बन्धों क विषय में **मूसा** को अपना संदेश दिया था ताकि मूसा इसे लोगों तक पहुंचा सके। यह सब तथ्यों से महत्वपूर्ण तथ्यों के साथ आरम्भ होता है: **परमेश्वर** ने कहा, **"मैं यहोवा हूँ,"** अपने व्यक्तिगत नाम "याहवेह" नाम का उपयोग करते हुए (יהוה, *याहवेह)*, जहाँ पर अंग्रेजी अनुवाद में यह "लार्ड" पढ़ा जाता है।

यह घोषणा आने वाले वैध मामले में बार-बार आती है (18:1-6 में चार बार और 18:21 और 18:30 दो बार और)। यह इस तथ्य की घोषणा करती है कि इन नियमों की उत्पत्ति परमेश्वर से हुई थी, कायनात में सर्वोच्च अधिकारी, और उसके उत्कृष्ट व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब हैं। जो कोई परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करता है वह उसके ईश्वरीय अधिकार और उसके पवित्र चरित्र का अनादर करता है। इसने उन लोगों को ये वचन फिर से स्मरण करवाए जिन्होंने इन्हें पहले सूना था कि लैव्यव्यवस्था के सभी नियम परमेश्वर की पवित्रता पर आधारित थे और

उन्हें इस्राएल को पवित्र बनाने के लिए रचा गया था। सब बातों के बाद, उसने कहा था, "क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ; इस कारण अपने को शुद्ध करके पवित्र बने रहो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ। इसलिये तुम किसी प्रकार के रेंगनेवाले जन्तु के द्वारा जो पृथ्वी पर चलता है अपने आप को अशुद्ध न करना। क्योंकि मैं वह यहोवा हूँ जो तुम्हें मिस्र देश से इसलिये निकाल ले आया हूँ कि तुम्हारा परमेश्वर ठहरूँ; इसलिये तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ" (11:44, 45)। इन नियमों का पालन करना इस्राएल को पवित्र बनाने में योगदान देगा।

आयत 3. इस अध्याय का संदेश यह कहते हुए आरम्भ होता है कि इस्राएलियों को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। उन्हें दूसरे देशों के मार्गों पर न चलने के लिए कहा गया था - उस देश से भी जिससे वे कुछ समय पहले बचकर निकले थे, **मिस्र**, या वे देश जिनका सामना वे **कनान के देश** में करने वाले थे (देखें 18:24)। इब्रानी पंक्ति जिसे **तुम मिस्र और कनान में जो किया गया था** उसे न करना में अनुवाद किया गया है उसका शाब्दिक अर्थ है "तुम मिस्र देश के कामों के अनुसार, जिसमें तुम रहते थे, न करना; और कनान देश के कामों के अनुसार भी।"

आयत 3 में पाया जाने वाला महत्वपूर्ण सत्य यह है कि परमेश्वर के लोग अनोखे थे; वे "सब लोगों में परमेश्वर का निज धन थे" (निर्गमन 19:5)। इसी कारण उन्हें भिन्न बनना था। उन्हें मिस्रियों के देवताओं और कनानियों के देवताओं की आराधना नहीं करनी थी, और न ही उन्हें या तो मिस्र या कनान की जीवन शैली को अपनाना था। **तुम उनकी विधियों पर न चलना** का अर्थ है "तुम उनकी रीतियों के पीछे न चलना और न उनकी मान्यताओं के अनुसार जीवन बिताना।"

आयत 4. मिस्र और कनान की "विधियों" का पालन करने की बजाए इस्राएली के लिए यहोवा की आज्ञाओं का पालन करना आवश्यक था। यह सुनिश्चित करने किए लिए, कि उसके सुनने वाले उसे समझें, यहोवा ने इस आवश्यकता का कई प्रकार से वर्णन किया। उसने कहा कि उसके लोग (उसके ही) **नियमों को माने** और **उसकी ही विधियों का पालन करें।** अन्य शब्दों में **उन्हें उनमें एक मन होकर जीना था**, या, शाब्दिक तौर पर, "उनमें चलना था।" क्यों? क्योंकि परमेश्वर (उनका) यहोवा परमेश्वर था!

आयत 5. यदि वे यहोवा की आज्ञाओं का पालन करते, तो परिणाम क्या होता? इस अध्याय के परिचय की अन्तिम आयत इस प्रश्न का उत्तर देती है। यदि वे उसकी **विधियों** और **नियमों** का पालन करें, तो वे धन्य होंगे, क्योंकि जो **मनुष्य** ऐसा करेगा वह **जीवित** रहेगा इस आयत में जीवित रहना केवल *निरे* तौर पर जीवित बचा रहना नहीं है, बल्कि इसके विपरीत मरना है। इसके बजाए, यह संकेत करता है कि इस्राएल को जीवन में सब अच्छी वस्तुओं की आशीष दी जाएगी, जैसा कि उस एक इस्राएली को मिली जिसने परमेश्वर की इच्छा पूरी की थी। परमेश्वर ने अपने प्रकाशन के केन्द्रीय सत्य को बताते हुए एक बार फिर उसकी व्यवस्था का पालन करने के महत्व पर बल दिया: उसने कहा, **"मैं यहोवा हूँ।"**

सम्बन्धियों के साथ यौन सम्बन्ध वर्जित (18:6-18)

6"तुम में से कोई अपनी किसी निकट कुटुम्बिनी का तन उघाड़ने को उसके पास न जाए। मैं यहोवा हूँ। 7अपनी माता का तन, जो तुम्हारे पिता का तन है, न उघाड़ना; वह तो तुम्हारी माता है, इसलिये तुम उसका तन न उघाड़ना। 8अपनी सौतेली माता का भी तन न उघाड़ना; वह तो तुम्हारे पिता ही का तन है। 9अपनी बहिन चाहे सगी हो चाहे सौतेली हो, चाहे वह घर में उत्पन्न हुई हो चाहे बाहर, उसका तन न उघाड़ना। 10अपनी पोती या अपनी नतिनी का तन न उघाड़ना, उनकी देह तो मानो तुम्हारी ही है। 11तुम्हारी सौतेली बहिन जो तुम्हारे पिता से उत्पन्न हुई, वह तुम्हारी बहिन है, इस कारण उसका तन न उघाड़ना। 12अपनी फूफी का तन न उघाड़ना; वह तो तुम्हारे पिता की निकट कुटुम्बिनी है। 13अपनी मौसी का तन न उघाड़ना; क्योंकि वह तुम्हारी माता की निकट कुटुम्बिनी है। 14अपने चाचा का तन न उघाड़ना, अर्थात् उसकी स्त्री के पास न जाना; वह तो तुम्हारी चाची है। 15अपनी बहू का तन न उघाड़ना; वह तो तुम्हारे बेटे की स्त्री है, इस कारण तुम उसका तन न उघाड़ना। 16अपनी भौजी का तन न उघाड़ना; वह तो तुम्हारे भाई ही का तन है। 17किसी स्त्री और उसकी बेटी दोनों का तन न उघाड़ना, और उसकी पोती को या उसकी नतिनी को अपनी स्त्री करके उसका तन न उघाड़ना, वे तो निकट कुटुम्बिनी हैं; ऐसा करना महापाप है। 18और अपनी स्त्री की बहिन को भी अपनी स्त्री करके उसकी सौत न करना कि पहली के जीवित रहते हुए उसका तन भी उघाड़े।"

यहोवा ने घोषणा कर दी थी कि उसके "नियमों" और "विधियों" का निश्चय ही पालन किया जाना चाहिए। उसने एक सम्बन्धी के साथ यौन सम्बन्ध बनाने को वर्जित करने के साथ आरम्भ करते हुए, वे कुछ विशिष्ट नियम प्रस्तुत करते हुए इस सामान्य कथन का अनुसरण किया जिनका पालन इस्राएल को करना था।

यौन सम्बन्धों से सम्बन्धित इन नियमों के पहले और बड़े भाग ने कौटुम्बिक व्यभिचार की निंदा की। "कौटुम्बिक व्यभिचार" शब्द का अर्थ उन निकट सगे सम्बन्धियों के बीच में व्यभिचार है जिनसे विवाह करना व्यवस्था और परम्परा के अनुसार वर्जित है। शब्द अपने आप में इस पाप का उल्लेख एक "सगे सम्बन्धी" से यौन सम्बन्ध रखने के रूप में करता है। अधिकांश समाजों ने समस्त कालों और समस्त संसार में कौटुम्बिक व्यभिचार को गलत माना है, चाहे उन्होंने इन अपराधों को प्रायः भिन्न प्रकार से परिभाषित किया है। इन आयतों का उद्देश्य जो आगे आती हैं अधिकतर यह घोषित करना नहीं है कि कौटुम्बिक व्यभिचार गलत है बल्कि यह स्पष्ट करना है कि किन सम्बन्धों को गलत माना जाना चाहिए।

ऐसा होने पर भी, प्रत्येक कौटुम्बिक व्यभिचार का वर्णन नहीं किया गया है। वास्तव में यह वाक्यांश पिता और उसकी पुत्री के बीच यौन सम्बन्धों को ख़ारिज नहीं करता है। इस रिक्त स्थान की सबसे अच्छी व्याख्या यह है कि सभी जानते थे कि एक पिता और पुत्री के बीच यौन सम्बन्ध अस्वीकार्य थे। इसी कारण, इस

श्रृंखला में इस पाप का विवरण आवश्यक नहीं था। जॉन एम. स्प्रिंक्ल ने इस दृष्टिकोण को कुछ इस प्रकार लिया, और संकेत करते हुए कहा कि, "लूत की पुत्रियों के विषय में विवरण (उत्पत्ति 19:31-38) स्पष्ट तौर पर संकेत करता है कि सदोम के प्रकार का ये आचरण निंदनीय था" उन्होंने कहा कि "यहाँ तक कि अधिकांश स्पष्ट मामलों में निकट सम्बन्धियों के साथ यौन सम्बन्ध सामान्य तौर पर प्रतिबन्धित है (*से एर बेसारो*; लैव्य. 18:6), एक ऐसी अभिव्यक्ति जिसमें और कहीं (लैव्य. 21:2-3) किसी की माता, बहन और पुत्री को सम्मिलित करते हुए परिभाषित किया गया है।"[3] वर्जित सम्बन्धों के विशिष्ट मामलों को प्रतिनिधि के रूप में समझा जाना चाहिए। इन मामलों में - और इनके समान अन्यों में, जिनमें अधिकांश स्पष्ट पारिवारिक सम्बन्ध सम्मिलित थे - एक इस्राएली को अपने किसी सम्बन्धी के साथ यौन सम्बन्ध स्थापित नहीं करने थे।

क्यों कौटुम्बिक व्यभिचार एक वैश्विक वर्जित विषय है जिसके ऊपर बहस की गई हैं। एक तथ्य निश्चित है: मनुष्यों के लिए निकट परिवार के सदस्यों के साथ आदतन विवाह का अभ्यास करना समाज के लिए हानिकारक होगा।[4] इस सन्दर्भ में, और बहुत से अन्य में, पेंटाटुक में पाए जाने वाले नियम इस्राएल के लिए एक आशीष थे, क्योंकि वे उन समस्याओं की रोकथाम करते थे जिनका कारण एक कौटुम्बिक व्यभिचार का आचरण होता। हालाँकि, अध्याय 18 सगे सम्बन्धियों के साथ यौन सम्बन्धों को वर्जित करने का कोई कारण नहीं देता, बल्कि इसके बजाए कब ये संकेत करता है कि ये उन अन्य लोगों के द्वारा अभ्यास किए जाते थे जिनका अनुसरण इस्राएलियों को नहीं करना था और यह सुझाव देता है कि यह यहोवा परमेश्वर की पवित्रता के साथ असंगत है।

आयत 6. जिस व्यवस्था में ये विशिष्ट प्रतिबन्ध थे वह एक प्रकार के विषय वाक्य के साथ आरम्भ होती है - एक सामान्य नियम जिसे उन विशेष विधियों के साथ दिया गया और समझाया गया है जो इसके बाद आती हैं: **"तुम में से कोई भी अपनी[5] निकट कुटुम्बिनी का तन उघाड़ने के लिए उसके पास न जाए।"** "तन उघाड़ना" यौन सम्बन्ध बनाने के लिए एक व्यंजना है (देखें यहेजकेल 16:36; 23:18), तो इस वाक्यांश में विधियों का तात्पर्य प्रत्येक इस्राएली को एक "सगे सम्बन्धी" के साथ यौन सम्बन्ध बनाने से रोकना था। इसने सगे सम्बन्धियों में विवाह को वर्जित किया।

पेंटाटुक की पिछली पुस्तकों से परिचित किसी भी व्यक्ति को ये समझ आ जाएगा कि पितृ इनमें से कुछ आचरणों में लिप्त हुए थे जो वर्जित थे। उदाहरण के लिए, अब्राहम उसकी सौतेली बहन से विवाहित था (उत्पत्ति 20:12), और याकूब एक ही समय में दो सगी बहनों से विवाहित था (हालाँकि उसके अपने चुनाव से नहीं; उत्पत्ति 29:15-30)। परमेश्वर ने सीनै पर ऐसे नियम क्यों दिए जो पितरों को दोषी ठहराते थे जिन्हें उसने पहले चुना था? इसकी एक व्याख्या यह है कि लैव्यव्यवस्था 18 के नियम पहले से ही शक्ति में थे, परन्तु पितृ उनका पालन करने में विफल हो गए थे। यह आगे यह प्रदर्शन करेगा कि वे चूक करने वाले मनुष्य थे। एक अन्य सम्भावना यह है कि परमेश्वर ने इस अवसर पर नए नियम दिए थे, हो

सकता है उन समस्याओं की रोकथाम के लिए जो व्यवस्था दिए जाने से पहले कौटुम्बिक यौन सम्बन्धों के कारण उत्पन्न हुई थीं।

18:6-18 के नियमों में, यह स्पष्ट है कि उनमें से कुछ जिनके साथ किसी को यौन सम्बन्धों के लिए वर्जित किया गया था वे वाक्य के सामान्य भाव के अनुसार वास्तव में "सगे सम्बन्धी" नहीं थे। व्यवस्था के द्वारा बताए गए व्यक्ति से वे आनुवंशिक तौर पर सम्बन्धित नहीं थे। उदाहरण के लिए, एक सौतेली बहन, वास्तव में लहू के माध्यम से उसके सौतेले भाई से सम्बन्धित नहीं है। सम्भवतः, फिर, इन आयतों का तात्पर्य "सगे सम्बन्धियों" की परिभाषा देना था। यहाँ पर इस परिभाषा का विस्तार एक ऐसी स्त्री को सम्मिलित करने के लिए किया गया था जो एक निकट सम्बन्धित थी, या उसका विवाह किसी ऐसे अन्य व्यक्ति से किया गया था, जो उसका सगा सम्बन्धी था। उसके साथ यौन संबंध व्यवस्था के विरुद्ध होगा। एक बार फिर, यहोवा ने अपना नाम कहकर अपने वचन के महत्व पर ज़ोर दिया: **"मैं यहोवा हूँ। "**

निम्नलिखित आयतों में नौ वर्जित यौन संबंध हैं। इनमें से कई अध्याय 20 के प्रतिबन्धों में भी हैं, आमतौर पर इनका उल्लेख नियमों को तोड़ने के लिए दण्ड के साथ किया जा रहा है।

आयतें 7, 8. *किसी का अपनी माता या सौतेली माता के साथ यौन सम्बन्ध बनाना* (देखें 20:11; व्यव. 22:30; 27:20)। पहले वर्जित यौन क्रिया अपनी माता के साथ यौन सम्बन्ध बनाना है।[6] यदि एक मनुष्य ऐसा करता, तो ऐसा करना **अपने पिता का तन उघाड़ने के समान था**। यह भाषा संकेत करती है कि माता का व्यक्तित्व पिता से सम्बन्धित था और उसका एक भाग था (देखें उत्पत्ति 2:23, 24)।

ऐसा **पिता कि ऐसी पत्नी** के लिए भी जो किसी की अपनी माता नहीं थी। यह संकेत ये हैं कि इस वाक्य में जिस स्त्री की बात की गई है वह एक व्यक्ति की सौतेली माता थी। वह बहु विवाह में से कोई एक पत्नी हो सकती थी (देखें उत्पत्ति 35:22; 49:4)। एक अन्य दृश्य है यह है कि एक मनुष्य की माता मर चुकी थी या उसका तलाक हो चुका था और उसके पिता ने फिर से विवाह किया था (देखें 1 कुरि. 5:1)। किसी की सौतेली माँ, उसकी माँ के ही समान, जो उसके पिता से इस प्रकार से जुड़ी हुई थी कि उसके यौन सम्बन्ध बनाना उसके विरुद्ध पाप करना होगा।

आयत 9. *किसी का अपनी बहन या सौतेली बहन से यौन सम्बन्ध बनाना* (देखें 20:17; व्यव. 27:22)। इसके बाद यहोवा ने एक मनुष्य को उसकी बहन से यौन सम्बन्ध बनाने से वर्जित किया था, चाहे वह **उसके पिता की बेटी या माता की बेटी रही हो**। यह भाव कि "पिता की बेटी" का आमतौर पर अर्थ एक सगी बहन है, जो सम्बन्धित मनुष्य माता-पिता की ही पुत्री थी। इसके विपरीत, "माता की बेटी" एक ऐसी बहन की बात करता है जो उस मनुष्य की माता की बेटी थी परन्तु उसका पिता अलग था। यहाँ पर जिस स्थिति की परिकल्पना की गई है कि जिस व्यक्ति का यहाँ पर वर्णन किया गया है उसके पिता ने एक पुत्री वाली विधवा स्त्री से विवाह किया था और इसके बाद दम्पत्ति के एक पुत्री उत्पन्न हुई थी। इस

प्रकार के मामले में, पुत्र को अपनी माता की पुत्री को बहन के रूप में देखना था और उसे उसके साथ यौन सम्बन्ध स्थापित नहीं करने थे।

यह वाक्य कि **चाहे वह घर में उत्पन्न हुई हो चाहे बाहर**, उसका विभिन्न प्रकार से अनुवाद किया गया है। इसका अर्थ ये हो सकता है कि चाहे सौतेली बहन किसी दूसरे परिवार में क्यों न जन्मी है, उसे फिर भी बहन ही समझा जाना था; तो इसी कारण उसे उसके साथ यौन सम्बन्ध स्थापित नहीं करने थे और न ही उसके साथ विवाह करना था। गौर्डन जे. वेन्हम के द्वारा समर्थित एक अन्य सम्भावना यह है कि, यह नियम किसी ऐसी स्थिति की परिकल्पना कर रहा था जिसमें पुत्री वाली एक विधवा स्त्री जो एक नए पति के साथ रहने के लिए चली गई थी, अपने परिवार के साथ अपनी पुत्री को पीछे छोड़कर। इस प्रकार के मामले में, चाहे वह पुत्री किसी दूसरे परिवार के पास पल रही थी, तौभी वह उस स्त्री के दूसरे पति के द्वारा हुए उसके पुत्र से विवाह करने के लिए अयोग्य ठहरेगी।[7] REB में अनुवाद इस व्याख्या का पक्ष लेता हुआ प्रतीत होता है: "आपको निश्चय ही अपनी बहन के साथ यौन सम्बन्ध नहीं रखने चाहिए, चाहे वह आपके पिता की बेटी हो या आपकी माता की पत्नी हो, चाहे वह आपके परिवार में पली हो या अन्य घर में पली हो; आपको उनकी लज्जा का कारण नहीं बनना चाहिए।"

आयत 10. *किसी व्यक्ति अपनी पोती के साथ यौन सम्बन्ध रखना।* किसी की पोती के साथ यौन सम्बन्ध रखना भी वर्जित है, चाहे वह किसी के पुत्र की पुत्री हो या उसकी पुत्री की। यहाँ पर जो कारण दिया गया है वह यह है कि दादा और पोती के बीच के सम्बन्ध इतना करीबी होता है कि वह इस प्रकार के मेल को निन्दनीय बनाता है। वास्तव में, यहोवा ने कहा कि कोई उसकी पुत्री के साथ यौन सम्बन्ध न रखे क्योंकि **उसका तन उघाड़ना अपना ही तन उघाड़ना है**। इस प्रकार की परिस्थितियों में एक व्यक्ति - किसी ऐसे के साथ, यौन सम्बन्ध बनाना, जो वास्तव में उसका ही एक भाग है - यह भ्रष्ट आचरण और घृणित है।

आयत 11. *किसी का अपनी सौतेली बहन से यौन सम्बन्ध रखना।* अवैध यौन सम्बन्धों की अगली श्रेणी को समझना कठिन है। यह वाक्यांश **तुम्हारी सौतेली बहन जो तुम्हारे पिता से उत्पन्न हुई है** यह सावधानीपूर्वक सौतेली माता की पुत्री का उल्लेख करती हुई प्रतीत होती है, क्योंकि यह "तुम्हारी माता की पुत्री।" हालाँकि, आयत यह कहने के लिए आगे बढ़ती है कि यह पुत्री **तुम्हारे पिता से उत्पन्न** ('से उत्पन्न'; KJV) हुई है। यदि इन शब्दों को शाब्दिक तौर पर लिया जाए, तो वह उसकी सगी बहन या एक सौतेली बहन ठहरेगी; परन्तु यदि ऐसा था तो, इस विधि की कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि आयत 9 ने पहले ही एक बहन के साथ यौन सम्बन्धों को वर्जित कर दिया था। "तुम्हारे पिता से उत्पन्न हुई है" में अनुवादित वाक्य की कठिनाई को एक भिन्न समझ के द्वारा हटाया जा सकता है। इस वाक्य का एक अच्छा उदाहरण ये है कि इसका अर्थ ये नहीं है "तुम्हारे पिता से उत्पन्न हुई है," परन्तु "जो किसी के पिता के ... एक विस्तृत परिवार से आती है।"[8] यदि यह सटीक है तो, किसी एक पिता के विस्तृत परिवार में से आई एक सौतेली बहन से भी विवाह करना और यौन सम्बन्ध रखना वर्जित किया गया था।

आयतें 12-14. *किसी का अपनी फूफी, मौसी और चाची के साथ यौन सम्बन्ध बनाना* (देखें 20:19, 20)। अगला वर्जित कार्य है एक मनुष्य का अपनी फूफी, मौसी और चाची के साथ यौन सम्बन्ध रखना, चाहे वह **उसके पिता की बहन** हो, उसकी **माता की बहन** हो, या उसके **पिता के भाई** की पत्नी हो। पहले दो मामलों में, **फूफी और मौसी** किसी के माता या पिता की एक सगी सम्बन्धी रही होगी, इसी कारण वह उसकी स्वयं की सगी सम्बन्धी थी। तीसरे मामले में, स्त्री का सम्बन्ध एक व्यक्ति के चाचा (एक सगे सम्बन्धी) से था जो उसे उस व्यक्ति की एक सगी सम्बन्धी बनाएगा जिसे ये नियम बताए जा रहे थे। ये कहा जा चुका है, "एक भतीजा अपने चाचा के जीवन काल में अपनी चाची से विवाह नहीं कर सकता था, और वह अपने चाचा के मृत्यु के पश्चात भी उसकी चाची से विवाह नहीं कर सकता था।"[9]

आयत 15. *किसी का अपनी पुत्रवधू के साथ यौन सम्बन्ध बनाना* (देखें 20:12)। इसके बाद यहोवा ने एक मनुष्य का उसकी **पुत्रवधू** से यौन सम्बन्ध रखना वर्जित कर दिया। जैसा कि अन्य मामलों में है, इसमें सम्मिलित मनुष्य के पास उसकी पुत्रवधू को उसके साथ यौन सम्बन्ध रखने के लिए विवश करने के शक्ति रही होगी; परन्तु उसे अपनी शक्ति का उपयोग इस प्रकार के बुरे उद्देश्य के लिए नहीं करना था। उसकी सादगी का आदर करते हुए, वह अपने स्वयं के मांस-और लहू - उसके पुत्र का आदर भी कर सकता है।

आयत 16. *किसी का अपनी भाभी के साथ यौन सम्बन्ध बनाना* (देखें 20:21)। उन व्यक्तियों की यह सूची जिसमें किसी को किन व्यक्तियों के साथ यौन सम्बन्ध नहीं रखने चाहिए थे एक व्यक्ति के अपनी भाभी (**भाई की पत्नी**) यौन सम्बन्ध बनाने की आज्ञा के साथ समाप्त होता है। एक बार फिर, यह पर जो कारण दिया गया है वह ये है कि उसका एक व्यक्ति के भाई से विवाहित होना उसे परिवार का एक भाग बनाता था, इसी कारण वह एक सगी सम्बन्धी थी। परिणामस्वरूप, नियम यह था कि एक भाई को उसके साथ विवाह नहीं करना चाहिए।

बाद में व्यवस्थाविवरण 25:5-10 में पाए जाने वाले एक नियम में, जिसे आज "लेविरैट नियम के रूप में जाना जाता है,"[10] पहली झलक में इस विधि का विरोध करता हुआ प्रतीत होता है। यदि एक व्यक्ति का भाई बिना वारिस छोड़ मर गया था, तो एक मनुष्य को अपने भाई की विधवा से विवाह करना पड़ता था। इसके साथ ही, शर्त यह थी कि उनके मिलने से उत्पन्न हुआ बालक उस मृत भाई का बालक समझा जाता था, और वह उस सम्पत्ति का अधिकारी हो जाता था जो मृत भाई से सम्बन्धित थी। इन दो नियमों में स्पष्ट अन्तर यह है कि लैव्यव्यवस्था का नियम एक जीवित भाई की बात करता है, जबकि व्यवस्थाविवरण का नियम एक ऐसे भाई के विषय में बात कर रहा है जो मर चुका था। इसी कारण, लैव्यव्यवस्था के नियम के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को तलाक दे देता था, तो भी उसका भाई उसकी पत्नी से विवाह नहीं कर सकता था।[11] दूसरे हाथ पर, यदि, किसी व्यक्ति का भाई वारिस छोड़े बिना मर जाता था, तो उस व्यक्ति का उसके भाई की विधवा से विवाह करना आवश्यक था ताकि उसके भाई का

नाम बना रहे।

आयत 17. *किसी का एक स्त्री और उसकी पुत्री या पोती से यौन सम्बन्ध रखना* (देखें 20:14)। यहोवा ने इसके बाद के मनुष्य को **एक स्त्री और उसकी पुत्री**, या **एक स्त्री और उसकी पोती** (**एक पुत्र की पुत्री** या **एक पुत्री के पुत्री**) के साथ यौन सम्बन्ध रखने से वर्जित किया। सम्भवतः, यह नियम एक स्त्री और उसकी बेटी या पोती के साथ एक ही समय में चल रहे यौन सम्बन्धों को वर्जित करने के लिए था (न कि एक से विवाह करने और इसके बाद दूसरी से विवाह को)। (पुराने नियम के समय में, परमेश्वर ने एक व्यक्ति को एक से अधिक पत्नी रखने की अनुमति दी, हालाँकि, उत्पत्ति से विवाह के लिए उसकी एक योजना थी कि एक मनुष्य के पास केवल एक पत्नी होनी चाहिए; देखें मत्ती 19:4-6.) इस नियम के अनुसार, एक व्यक्ति का या ऐसे करीबी संबंधित व्यक्तियों के साथ यौन सम्बन्ध रखना या विवाह करना व्यभिचार (या "दुष्टता"; KJV) था।

आयत 18. *दो बहनों से विवाहित होना।* यह आयत कौटुम्बिक व्यभिचार के सम्बन्ध में दिए गए प्रतिबन्धों कि इस श्रृंखला को एक मनुष्य को उसकी **पत्नी की बहन** के साथ विवाह करने से वर्जित करने के द्वारा समाप्त करती है। यह स्पष्ट करती है कि इस प्रकार का विवाह दूसरी बहन को उसकी पहली पत्नी का **शत्रु** बना देगा।[12] हालाँकि, यह नियम, इस शर्त के साथ सीमित था कि **जब तक वह जीवित थी**, और यह संकेत करता था कि एक व्यक्ति का उसकी पत्नी के मरने के बाद उसकी पत्नी की बहन से विवाह करना स्वीकार्य ठहरेगा।

अन्य निषेध यौन संबंध (18:19-23)

[19]"फिर जब तक कोई स्त्री अपने ऋतु के कारण अशुद्ध रहे तब तक उसके पास उसका तन उघाड़ने को न जाना। [20]फिर अपने भाईबन्धु की स्त्री से कुकर्म करके अशुद्ध न हो जाना। [21]अपनी सन्तान में से किसी को मोलेक के लिये होम करके न चढ़ाना, और न अपने परमेश्वर के नाम को अपवित्र ठहराना; मैं यहोवा हूँ। [22]स्त्रीगमन की रीति से पुरुषगमन न करना; वह तो घिनौना काम है। [23]किसी जाति के पशु के साथ पशुगमन करके अशुद्ध न हो जाना, और न कोई स्त्री पशु के सामने इसलिये खड़ी हो कि उसके संग कुकर्म करे; यह तो उलटी बात है।"

इस अध्याय में पाई जाने वाली अधर्मी लैंगिक संबंध की सूची में अगम्यागामी हावी होता है, परंतु इसमें अन्य लैंगिक पापों की भी निंदा की गई है।

आयत 19. *ऋतुमति के दौरान स्त्री के साथ लैंगिक संबंध* (देखें 20:18)। लैव्यव्यवस्था की पुस्तक में इससे पहले दी गई आज्ञा को दोहराते हुए, यहोवा ने पुरुष को **ऋतु के कारण अशुद्ध स्त्री** के साथ प्रसंग करने से मना किया है (15:24)। यद्यपि इस संदर्भ में दूसरे कुछ प्रतिबंधित व्यवहार के समान ये कार्य बुरे नहीं लगते हैं (जैसे पड़ोसी की पत्नी के साथ प्रसंग करना), लेकिन कोई भी यह समझ सकता है कि इस अध्याय में वर्णित अन्य पापों की सूची में यह पाप क्यों रखा गया है:

आखिरकार, इसमें लैंगिक कार्य संलग्न है जिसकी परमेश्वर ने निंदा की है। इस व्यवस्था को मानने का तात्पर्य यह है कि एक पुरुष अपने पत्नी का ध्यान रखता है या इस दौरान उससे प्रसंग न करके वह उसके प्रति प्रेम प्रकट करता है।

आयत 20. *पड़ोसी की पत्नी के साथ कुकर्म* (देखें 20:10)। जिस तरह पिछली आयत में पहली दी गई आज्ञा दोहराई गयी है, उसी तरह यह व्यवस्था भी **पड़ोसी की पत्नी** के साथ कुकर्म, यौन संबंध से जुड़े सर्वमान्य आज्ञा दोहराता हैः "तू व्यभिचार न करना" (निर्गमन 20:14; व्यव. 5:18)।[13] ऐसा पाप दोनों को **अशुद्ध** करता है; व्यवस्था के आधीन इसके लिए मृत्युदण्ड का प्रावधान भी था (व्यव. 22:22)।

आयत 21. *मूर्तिपूजा।* यौन व्यवहार से संबंधित व्यवस्था के बीच मूर्तिपूजा निषेध विधि जोड़ दिया गया हैः **अपनी सन्तान में से किसी को मोलेक के लिये होम करके न चढ़ाना, और न अपने परमेश्वर के नाम को अपवित्र ठहराना** (देखें 20:1-5)। संभवतः, इसके पीछे यह धारणा हैः "तू झूठे मोलेक को होम करके यहोवा के नाम को अपवित्र न ठहराना।" इस विधि में परमेश्वर के नाम को दोबारा उच्चारित करके उसके नाम पर ज़ोर दिया गया है। चूँकि वही एक और अकेला **यहोवा** है, उसके लोगों को केवल उसी की आज्ञा मानना है और केवल उसी की आराधना करना है।

इस प्रकार की विधि आश्चर्यचकित करने वाला नहीं है; मूसा की व्यवस्था में कई स्थानों पर और कई माध्यमों से मूर्तिपूजा प्रतिबंधित करती है (देखें, उदाहरण, निर्गमन 20:1-6)। प्रश्न यह है "क्यों इस संदर्भ में यह व्यवस्था पाई जाती है?" क्योंकि झूठे देवता की आराधना[14] (बच्चों को उसके लिए होम करके) करना उसके साथ आत्मिक व्यभिचार करने जैसा था (देखें निर्गमन 34:15, 16)।[15] व्यवस्था के अनुसार मूर्तिपूजा का दण्ड मृत्यु था!

आयत 22. *समलैंगिक यौन संबंध।* व्यवस्था में किसी भी प्रकार का समलैंगिकता मना है: **स्त्रीगमन की रीति से पुरुषगमन न करना।** इस प्रकार के कार्य को **घिनौना** (תּוֹעֵבָה, *थोएबाह)* कहा गया है। लैव्यव्यवस्था 20:13 इस व्यवस्था को दोहराता है, जिसमें कहा गया है कि जो इस आज्ञा को नहीं मानते हैं उन्होंने "घिनौना कार्य" *(थोएबाह)* किया है और उन्हें मृत्युदण्ड दिया जाना चाहिए। इसमें कोई संयोग नहीं है कि पुराने नियम में जब किसी समाज को पूरी तरह भ्रष्ट प्रस्तुत किया गया है, तो इसकी भ्रष्टता का कारण इसके भयंकर समलैंगिगता का परिणाम था (देखें उत्पत्ति 19)।[16] पुराने नियम के समलैंगिकता की दृष्टिकोण का समर्थन नया नियम भी करता है, यह इस बात को स्पष्ट करता है कि नये वाचा के अंतर्गत् समलैंगिकता पाप है (रोमियों 1:26, 27; 1 कुरिं. 6:9, 10)।

आयत 23. *पशुओं के साथ पशुगमन* (देखें 20:15, 16)। अंततः, यहोवा ने किसी पुरुष या **स्त्री** को किसी पशु के साथ **जोड़ा**[17] बनाने - जो आमतौर पर "पशुगमन" जाना जाता है, के लिए मना किया था। इस प्रकार का पाप विकृत विचारों वाला जाना जाता है और यह व्यक्ति को अशुद्ध करता है। परमेश्वर ने पहले कहा था कि "जो कोई पशुगमन करे वह निश्चय मार डाला जाए" (निर्गमन

22:19; देखें व्यव. 27:21)। कनान के लोगों में पशुगमन का प्रमाण इस बात से मिलता है कि प्राचीन मध्य पूर्व देशों के चित्रों में देवताओं को पशुओं के साथ संयोजन (संभोग) करते हुए दिखाया गया है।[18]

वर्णित व्यवस्था न मानने का दण्ड (18:24-30)

[24]"ऐसा-ऐसा कोई भी काम करके अशुद्ध न हो जाना, क्योंकि जिन जातियों को मैं तुम्हारे आगे से निकालने पर हूँ वे ऐसे-ऐसे काम करके अशुद्ध हो गई हैं; [25]और उनका देश भी अशुद्ध हो गया है, इस कारण मैं उस पर उसके अधर्म का दण्ड देता हूँ, और वह देश अपने निवासियों को उगल देता है। [26]इस कारण तुम लोग मेरी विधियों और नियमों को निरन्तर मानना, और चाहे देशी चाहे तुम्हारे बीच रहनेवाला परदेशी हो, तुम में से कोई भी ऐसा घिनौना काम न करे; [27]क्योंकि ऐसे सब घिनौने कामों को उस देश के मनुष्य जो तुम से पहले उसमें रहते थे वे करते आए हैं, इसी से वह देश अशुद्ध हो गया है। [28]अब ऐसा न हो कि जिस रीति से जो जाति तुम से पहले उस देश में रहती थी उसको उसने उगल दिया, उसी रीति जब तुम उसको अशुद्ध करो, तो वह तुम को भी उगल दे। [29]जितने ऐसा कोई घिनौना काम करें वे सब प्राणी अपने लोगों में से नष्ट किए जाएँ। [30]यह आज्ञा जो मैं ने तुम्हारे मानने को दी है उसे तुम मानना, और जो घिनौनी रीतियाँ तुम से पहले प्रचलित हैं उनमें से किसी पर न चलना, और न उनके कारण अशुद्ध हो जाना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

अभी-अभी निषिद्ध यौन संबंध के बारे में संदेश, परमेश्वर के लोगों को व्यवस्था मानने की आज्ञा, एक बहुत ही अच्छा कारण देकर समाप्त होता है। यदि उन्होंने आज्ञा नहीं मानी तो वे दण्डित किए जाएंगे! (देखें 20:22-24.)

सारांश यह है कि जो यहोवा ने पापमय कार्यों की सूची जारी की है, उसके लोग उसका अभ्यास न करें क्योंकि जो लोग इससे पहले इस देश में रहते थे, जहाँ ये निवास करने वाले हैं, ऐसे-ऐसे घिनौने कार्य करते थे और इस कारण इस देश ने "उन्हें उगल दिया था।" यदि इस्राएली लोगों ने उनके घृणित कार्यों का अनुकरण किया तो उन्हें भी उसी प्रकार का दण्ड मिलेगा: "देश उन्हें भी उगल देगा।"

आयत 24. यहोवा का अंतिम तर्क इस्राएलियों को जो आदेश उसने उन्हें दिया था उनको न करने की चेतावनी देकर प्रारंभ होता है। क्यों? क्योंकि उस देश के लोग जहाँ इस्राएलियों को बसना था - उन लोगों को जिसे यहोवा वहाँ से **बाहर निकालने** की प्रक्रिया में था - इन घिनौने कार्यों से **अशुद्ध** हो चुके थे।

आयत 25. कनानियों का घिनौने कार्यों का परिणाम यह था कि जिस **देश** में वे रहते थे वह **अशुद्ध हो चुका** था। इस कारण, यहोवा इस देश पर **दण्ड लाता** है। इब्रानी शब्द जिसका अनुवाद "दण्ड" (עָוֹן, *'आवोन)* है, का शाब्दिक अनुवाद "पाप" है। इब्रानी शब्द जिसका अनुवाद "दण्ड" है, "पाप" के परिणाम पर ज़ोर देता है, जो इस आयत का आशय भी है।

यहोवा के आदेशानुसार इसको अशुद्ध करने का दण्ड यह था कि **इस देश ने इसके निवासियों को उगल दिया था**। मानो देश को जीवित प्राणी के रूप में प्रदर्शित किया गया था। इस चित्रण के अनुसार, इस देश की अशुद्धता का परिणाम यह था कि इसके निवासियों द्वारा किए गए भयानक यौन पाप ने इसके पेट को बीमार कर दिया था, जिसका परिणाम यह हुआ कि इस देश ने जो लोग वहाँ रहते थे उनको उगल दिया।

चौबीसवीं और पच्चीसवीं आयत इस्राएलियों का कनान देश पर विजय का पूर्वानुमान करता है, जो इस विधि के दिए जाने के लगभग चालीस वर्षों बाद पूरा हुआ। उस समय, इस्राएलियों ने उस देश पर अधिकार जमा लिया था और इसके निवासियों को या तो उन्होंने उस देश से बाहर निकाल दिया था या फिर (अधिकांश) उनको मौत के घाट उतार दिया था। परमेश्वर ने कनानियों को उस देश से, जहाँ उन्होंने अपने पाप का प्रदर्शन किया था, निर्वासित करने के लिए इस्राएलियों को एक हथियार के रूप में प्रयोग किया था।

आयत 26. यहोवा ने अपने संदेश को इस्राएलियों पर लागू किया, उसने अपने लोगों को उत्साहित किया कि वे उसके विधियों का पालन करें और इसके साथ ही उसने उन्हें चेताया कि जिस प्रकार के **घिनौने कार्यों** को उसने परिभाषित किया है उसको वे न दोहराएं। उसने स्पष्ट कर दिया था कि इस्राएली और परदेशी जो उनके बीच रहते हैं, दोनों पर यह विधि लागू होती है।

आयतें 27, 28. क्षणिक रूप से यह दोहराने के पश्चात् कि यह देश पूर्व निवासियों के घिनौने पापों के कारण अशुद्ध हो चुका था, यहोवा ने इस्राएलियों को, यदि वे विकृत यौन व्यवहार में सम्मिलित हुए तो उसके परिणामों के बारे में चेतायाः जिस तरह इस **देश** में रह रहे **जातियों** को उसने उगल दिया था यह **देश उन्हें भी उगल देगा**। दूसरे शब्दों में, यदि वे उस पाप के दोषी ठहरें जिसके कारण यह देश अशुद्ध हो गया था तो यहोवा यह सुनिश्चित करता है कि वे उस देश से निकाल दिए जाएंगे। यद्यपि वे दूसरे लोगों को कनान देश से बाहर निकालने के लिए हथियार के रूप में प्रयोग किए गए हों लेकिन यदि उन्होंने यहोवा की विधियों को नहीं माना तो वे स्वयं वहाँ से निकाल दिए जाएंगे।

आयत 29. इसके पश्चात् चेतावनी व्यक्तिगत् बना दी गई थी। संदेश केवल देश के लिए ही नहीं था (कि इसको शुद्ध रखा जाए) बल्कि यह परमेश्वर के पवित्र देश में रहने वाले हर एक व्यक्ति विशेष के लिए था। यदि कोई भी **इनमें से कोई घिनौने कार्य करता/ती है** वह **अपने लोगों में से नष्ट किया जाएगा**/गी। उसको कठोरत्तम दण्ड दिया जाएगा, संभवतः उसको यहोवा के हाथ मृत्यु या परमेश्वर के लोगों के बीच से बाहर निकाल दिया जाएगा।[19]

आयत 30. अंतिम प्रबोधन के शब्दों में, इस्राएलियों को परमेश्वर की आज्ञा मानने का आदेश दिया गया है कि वे अन्य जातियों जैसे **घिनौने कार्य** न करें जिसका परिणाम अशुद्धता होती है। परमेश्वर ने अपनी पहचान दोहराते हुए अपने आदेश को आधिकारिक कियाः **"मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"** कौन यहोवा परमेश्वर का उसके लोगों को दिए निर्देशों का उल्लंघन करेगा? कौन उसके निर्देशों को

चुनौती देगा?

रिचर्ड एन. बॉयस के शब्दों में इस अध्याय में सीखाया गया मुख्य पाठ यह है: "पवित्र परमेश्वर पवित्र लोगों की मांग करता है। न केवल वेदी पर ... बल्कि वह शयन कक्ष में भी ऐसा ही चाहता है।"[20] इस्राएल को यह सीखना था कि परमेश्वर के धार्मिक रीति रिवाज का पालन करके पवित्र होना ही पर्याप्त नहीं था; उन्हें तो पवित्र, अलग किए हुए, यौन व्यवहार को मिलाकर, उनको उनके जीवन के हर पहलू में पवित्र किए हुए लोगों के रूप में जीना था। आज भी परमेश्वर के लोगों को यही पाठ सीखना है।

अनुप्रयोग

नये नियम में वर्जित यौन संबंध (अध्याय 18)

आमतौर पर, नये नियम की यौन पाप से संबंधित शिक्षा, पुराने नियम की शिक्षा के जैसी या वैसी ही है। परस्त्रीगमन (एक या अधिक विवाहित व्यक्ति के साथ नजाएज यौन संबंध) की पहचान पापमय किया गया है,[21] यद्यपि यीशु का व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री के साथ मुठभेड़ (यूहन्ना 8:1-11) यह प्रदर्शित करता है कि व्यभिचार का पाप क्षमा किया जा सकता है और इसका दण्ड मृत्यु नहीं है।

आमतौर पर "व्यभिचार," का अनुवाद NASB में "अपतिव्रता" या "अनैतिकता" किया गया है, और नये नियम में भी यह वर्जित है।[22] "व्यभिचार" को आमतौर पर दो अविवाहित व्यक्तियों बीच यौन संबंध के रूप में परिभाषित किया गया है; परंतु यूनानी शब्द πορνεία *(पोर्निया)* का अनुवाद विस्तृत रूप में किया गया है, संभवतः जिसका विस्तृत अर्थ है और यह किसी भी गैरकानूनी प्रसंग को संबोधित करता है। सामान्य रूप से अन्य नये नियम के अनुच्छेद, कामुकता और कामुक व्यवहार की निंदा करता है।[23]

नया नियम यह स्पष्ट करता है कि समलैंगिकता, चाहे पुरुष हो या स्त्री गलत है (रोमियों 1:26, 27; 1 कुरिं. 6:9, 10)। फिर भी, इसमें अगम्यागमन या पशुगमन के बारे में कोई विशिष्ट आदेश नहीं पाया जाता है। अगम्यागमन की निंदा की गई है, यूहन्ना ने फिलिप्पुस की पत्नी से विवाह करने पर हेरोदेस की (मत्ती 14:3, 4) और कुरिंथुस की कलीसिया में एक व्यक्ति का जो अपने पिता की पत्नी के साथ अनैतिक यौन संबंध बनाए हुए था, की निंदा की है (1 कुरिं. 5:1)। संभवतः, पुराने नियम का यौन पाप, जिसका नये नियम में स्पष्ट रूप से वर्णन नहीं किया गया है, वह *पोर्निया* की मनाही में सम्मिलित है। दोनों विधानों में यौन संबंधों के बारे में स्पष्ट आदेश यह है कि एक पुरुष और उसकी एक ही पत्नी तक यह सीमित है।

कभी-कभी यह दावा किया जाता है कि नये नियम में नैतिकता की मांग पुराने नियम की नैतिकता से बढ़कर है। इसका तर्क यह है कि नए नियम में लोभ वर्जित है, जबकि व्यवस्था केवल कुछ यौन व्यवहारों को वर्जित करता है (इसके बजाए

यह लोभ को ही वर्जित करता है जो इस प्रकार की विचारों की ओर एक व्यक्ति को अग्रसित करता है)। यह तर्क यीशु कि जो शिक्षा मत्ती 5:27, 28 में पाया जाता हैः "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'व्यभिचार न करना।' परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका" पर आधारित है। इससे यह अंदेशा लगाया जाता है कि उसकी शिक्षा मूसा की व्यवस्था का विरोधाभास कर रहा था, फिर भी यह विरोधाभास यीशु और मूसा के बीच नहीं था। यह विरोधाभास तो यीशु और शास्त्रियों के बीच था। उसका वक्तव्य यह था, "तुम सुन चुके हो ...," न कि "मूसा ने कहा ... ।" इससे बढ़कर, पुराना नियम यह शिक्षा देता है कि जिस तरह व्यभिचार करना गलत है, उसी तरह किसी स्त्री पर कुदृष्टि डालना अनुचित है। दस आज्ञा पड़ोसी की पत्नी का लालच करने के लिए मना करता है (निर्गमन 20:17; व्यव. 5:21), और लालच करना लोभ के बराबर है। यीशु का लोभ के बारे में शिक्षा नई नहीं थी; यह तो व्यवस्था को दोहराती है, जिसको अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए था।

कोई भी यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि पुराने नियम में वर्जित यौन व्यवहार और नये नियम में वर्जित यौन व्यवहार के बीच यदि कोई और विरोधाभास है तो वह बहुत सूक्ष्म है। इसलिए, यह मान लेना चाहिए कि मूसा की व्यवस्था में कोई भी यौन व्यवहार जिसकी निंदा की गई है उसकी निंदा मसीह ने भी की है।

न तो मिस्र न ही कनान (18:3)

यहोवा ने इस्राएलियों को आज्ञा दी, "तुम मिस्र देश के कामों के अनुसार जिस में तुम रहते थे न करना; और कनान देश के कामों के अनुसार भी जहाँ मैं तुम्हें ले चलता हूँ न करना; और न उन देशों की विधियों पर चलना" (18:3)। परमेश्वर के लोगों को उस देश के लोगों के समान नहीं होना था जहाँ से वे निकले थे और न ही उस देश के लोगों के समान भी नहीं होना था जहाँ वे जा रहे थे। उन्हें तो सबसे अलग होना चाहिए था - एक "विशिष्ट" लोग (निर्गमन 19:5; KJV)। यदि वे यहोवा की आज्ञा मानेंगे तो वे अपने व्यवहारों के प्रति यह बहाना नहीं करेंगे कि "सभी लोग ऐसा ही करते हैं।"

नये युग में, मसीह की कलीसिया, आत्मिक इस्राएल है (1 पतरस 2:9, 10)। इस्राएल देश के समान, कलीसिया को भी वे सारी बातें नहीं करने के लिए कहा गया है जो संसार करती है या संसार के जैसे नहीं बनना है। मसीही लोगों को दूसरों से भिन्न होना चाहिए, "इस संसार के सदृश न बनो" (रोमियों 12:2) और "संसार के न" बनो (यूहन्ना 17:16)। परमेश्वर के लोगों को "संसार से निश्कलंक" रहना है (याकूब 1:27)। संसार के विषय में आज परमेश्वर यूँ कहता है, "उन के बीच में से निकलो और अलग रहो" (2 कुरिं. 6:17)।

मसीही होने के नाते, हमें कैसे जीना चाहिए, के विषय में कई प्रश्न पूछे जाते हैं। इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए हमको स्वयं प्रभु की ओर फिरने की आवश्यकता है। हमको हमारे देश के रीति रिवाजों के द्वारा निर्देशित नहीं होना चाहिए। "मिस्र"

और "कनान" की विधियां नहीं बल्कि वचन ही परमेश्वर के लोगों की अगुआई करे।

समाप्ति नोट्स

[1]आर. के. हैरिसन ने यह कहा कि संधि की इस शैली को "विशेषतः व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में देखा जा सकता है" (आर. के. हैरिसन, *लैव्यव्यवस्था*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेन्ट्रीज़ [डाउनर्स ग्रोव, इलिनोई: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1980], 184)। इन संधियों का वर्णन और चर्चा गॉर्डन, "कवेनेंटस एंड नियर ईस्टर्न ट्रीटीज़," इन *अड्समैन हैंडबुक टू द बाइबल,* एड. डेविड एलेग्जेंडर एंड पैट एलेग्जेंडर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1973), 198-99. [2]बाइबल के नियमों और हित्ती संधि के बीच समानता का उपयोग बाइबल के दस्तावेजों की पुरातनता को प्रदर्शित करने के लिए किया गया है। तर्क यह है कि यदि बाइबल की पुस्तकों में ऐसी सामग्री है जो दूसरी सहस्राब्दी हित्ती संधि की शैली का पालन करती है, तो बाइबल की सामग्रियों की तिथि छठी और पाँचवीं सहस्राब्दी ईसा पूर्व में आरम्भ होने की बजाए, दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व होनी चाहिए (जैसा कि वे लोग मानते हैं जो डॉक्यूमेंटरी हाइपोथिसिस को स्वीकार करते हैं)। [3]जॉन एम. स्प्रिंक्ल, "सेक्सुअलिटी, सेक्सुअल एथिक्स," इन *डिक्शनरी ऑफ़ द ओल्ड टेस्टामेंट: पेंटाट्युएक,* एड. टी. डेस्मंड एलेग्जेंडर एंड डेविड डब्ल्यू. बेकर (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोई.: इंटरवर्सिटी प्रेस, 2003), 747. [4]अंततः आन्तरिक प्रजनन किसी भी प्रजाति के लिए हानिकारक है, जिसमें संबंधित पशुओं या मनुष्यों के यौन मिलन के परिणामस्वरूप संतान पर नकारात्मक प्रभाव के साथ अप्रभावी जीन प्रभावी बन जाता है। उदाहरण के लिए, मनुष्यों में, जो कौटुम्बिक यौन संबंधों से उत्पन्न होते हैं, वे प्रारंभिक मृत्यु दर के दुगने जोखिम में होते हैं और उनके गंभीर मानसिक क्षति या विभिन्न शारीरिक विकृतियों से पीड़ित होने की दस गुना अधिक संभावना होती है। (एडवर्ड ओसबोर्न विल्सन, *कंसिलियंस: द यूनिटी ऑफ़ नॉलेज* [न्यूयॉर्क: अल्फ्रेड ए. कोंफ, 1998], 189.) [5]"उसका" शाब्दिक तौर पर "उसका तन।" [6]किसी का अपनी सास के साथ यौन सम्बन्ध बनाना भी वर्जित था (व्यव. 27:23)। [7]इसकी चर्चा गॉर्डन जे. वेन्हम की, *द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था,* द न्यू इंटरनेशनल कमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979) 255-56 में की गई है। सम्भवतः वाक्यांश एक ऐसी स्थिति की परिकल्पना करता है जिसमें एक पति और पत्नी के एक पुत्र उत्पन्न हुआ है, और इसके बाद पति मर जाता है। पत्नी फिर से विवाह कर लेती है और अपने पुत्र को अपने पिता के परिवार के साथ छोड़कर, अपने नए पति के साथ रहने चली जाती है। उसके बाद उसके दूसरे पति से उसे एक पुत्री हो जाती है; यह पुत्री उसके पुत्र की सौतेली बहन है और एक अन्य घराने में उसका पालन-पोषण किया जाता है। उसके पहले विवाह से उत्पन्न हुआ पुत्र उसके दूसरे विवाह से उत्पन्न पुत्री से विवाह नहीं कर सकता। [8]रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती,* द NIV एप्लीकेशन कमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन, 2004), 318. [9]डॉन डीवेल्ट, *लैव्यव्यवस्था*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज (जोप्लिन, एम.ओ.: कॉलेज प्रेस, 1975), 300. डीवेल्ट ने यह संकेत भी किया कि बाइबल में कई विवाहों में एक मनुष्य और उसकी चाची या उसी के समान एक सम्बन्ध सम्मिलित था: मूसा का पिता अम्राम उसकी फूफी योकेबेद से विवाहित था (निर्गमन 6:20); नाहोर ने उसकी भतीजी मिल्का से विवाह क्या था (उत्पत्ति 11:29)। ओत्नीएल ने अपनी भतीजी अकसा से विवाह किया (यहोशू 15:17; न्यायियों 1:13)। (उपरोक्त) ऐसा हो सकता है कि अकसा उसकी भतीजी के बजाए ओत्नीएल के चाचा की बेटी हो सकती थी। [10]"लेविरैट" लैटिन शब्द *लेविर* से आता है, जिसका अर्थ है "पति का भाई।" लेविरैट नियम कैसे कार्य करता था इसका उदाहरण रूत की पुस्तक में देखा जा सकता है।

[11]यह नियम हेरोदेस अन्तिपास के द्वारा तब तोड़ा गया था जब उसने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास विवाह किया था (मत्ती 14:3), जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का उसे यह बताने का कारण बना, "ऐसा करना तेरे लिए उचित नहीं है" (मत्ती 14:4)। हेरोदेस इस नियम को

तोड़ने का दोषी था और इसलिए कौटुम्बिक व्यभिचार का दोषी था। [12]याकूब ने दो बहनों से विवाह किया, राहेल और लिआ। उनकी शत्रुता यह वर्णन करती है यदि कोई मनुष्य दो बहनों से विवाह करे तो समस्याएं उत्पन्न होने की सम्भावना रहेगी (उत्पत्ति 29; 30)। [13]मूसा की व्यवस्था के अंतर्गत्, "व्यभिचार" का तात्पर्य दूसरे की पत्नी के साथ यौन क्रिया करना है। एक अविवाहित स्त्री के साथ अवैध यौन संबंध स्थापित करने को "व्यभिचार" नहीं कहा गया है। [14]सी. एफ. कील और एफ. डेलित्ज ने इन शब्दों के साथ इस आयत की टिप्पणी का परिचय कराया "शारीरिक अपवित्रता में आत्मिक वेश्यावृति की मनाही सम्मिलित है" (सी. एफ. कील और एफ. डेलित्ज, *द पेंटाट्यूक*, खण्ड 2, अनुवादक जेम्स मार्टिन, बिब्लिकल कमेंट्री आन द ओल्ड टेस्टामेंट [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1959], 416)। [15]कि अनुच्छेद यह स्पष्ट नहीं करता है कि जब इस्राएली लोग अपने बच्चों को मोलेक को होम करके चढ़ाते थे तो वे उन्हें आग में से होकर नहीं गुजरने देते थे, दूसरा संभावित विश्लेषण यह है कि बच्चों को मोलेक को होम करके इसलिए चढ़ाते थे ताकि वे उसकी वेश्या के रूप में सेवा करे। जेकब मिलग्रोम ने इस संभावित विश्लेषण का वर्णन किया है लेकिन उन्होंने इसके साथ यह भी कहा, "अधिक संभावना यह है ... इस्राएल के पड़ोसी देशों में यह बाल बलिदान की सामान्य प्रथा का संदर्भ है (*cf.* II राजा. 3:27)" (जेकब मिलग्रोम, "द बुक आफ लैव्यव्यवस्था," *दि इंटरप्रेटर्स वन-वोल्यूम कमेंट्री आन द बाइबल*, सम्पादक चार्ल्स एम. लेमन [नैशविलः अबिंगदन प्रेस, 1971], 79)। [16]उत्पत्ति 19 में दुष्ट नगर सदोम के विनाश से पहले, लूत के घर दो स्वर्गदूतों के आने की कहानी पाई जाती है। इस नगर के लोगों ने घर को घेर लिया और वे लूत से यह कहने लगे कि वह उन दोनों अज़नबियों को घर से बाहर निकाले ताकि वे उनके साथ "भोग" करें (उत्पत्ति 19:5; KJV)। NASB ठीक ही "भोग" ("know") शब्द का अनुवाद "संबंध स्थापित करना" करता है। NIV में इस शब्द का स्पष्ट अनुवाद "संभोग करना" किया गया है। इस बात पर तर्क किया जाता है कि सदोम के लोग स्पष्ट समलैंगिक प्रवृति प्रकट नहीं करते हैं; वे तो केवल आगुंतकों का परिचय लेना चाहते थे। स्प्रिंकल ने उचित ही कहा है कि यह कोई बुद्धिमानीपूर्ण तर्क नहीं है। (स्प्रिंकल, 748.) [17]"जोड़ा बनाना," इब्रानी शब्द רָבַע *(रावा)* का अनुवाद है जिसका शाब्दिक अर्थ "लेटना" है। [18]स्प्रिंकल, 749. [19]"नष्ट किया जाएगा" का दूसरा संभावित विश्लेषण यह है कि वह बच्चे रहित मर जाएगा; इसलिए इस्राएल के लोगों में से उसका नाम "हटा दिया जाएगा।" यह भी स्मरण रखा जाना चाहिए कि इस अध्याय में बताए गए कई अन्य पापों के लिए व्यवस्था में मृत्युदण्ड (जो लोगों के द्वारा दिया जाएगा) का प्रावधान है। [20]रिचर्ड एन. बॉयस, *लैव्यव्यवस्था एण्ड गिनती*, वेस्टमिंस्टर बाइबल कम्पैनियन (लुईविलः वेस्टमिंस्टर जॉन नॉक्स प्रेस, 2008), 65.

[21]देखें मत्ती 5:27; 19:18; रोमियों 2:22; 13:9; 1 कुरिं. 6:9; इब्रा. 13:4; याकूब 2:11. [22]देखें प्रेरितों 15:20, 29; 1 कुरिं. 5:1; 6:18; गला. 5:19; इफि. 5:3; कुलु. 3:5; 1 थिस्स. 4:3. [23]उदाहरण के लिए, गलातियों 5:19 और इफिसियों 5:3 "लुचपन" और "कामुकता" की निंदा करता है।